प्रातःक्लास ॐ पिताश्री

30.8.65 R-ओम नमो शिवाय.....ओमशांति। यह किसने कहा ओमशांति? आत्मा ने। इन शरीर के कर्मेंद्रियों द्वारा आत्मा ने कहा। आत्मा तो है अविनाशी। शरीर है विनाशी। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। कितने जन्म लेती है? क्या सदैव एक शरीर छोड़ दूसरा लेती रहती है? नहीं। आत्मा सबसे जास्ती जन्म 84 ही लेती है। इनको ही कहा जाता है 84 का चक्कर। एसे भी नहीं कि सभी 84 जन्म लेते हैं। नहीं। मनुष्य तो इन बातों को नहीं जानते हैं। गीत में भी सुना शिवाय नमः। शिव है ऊँच ते ऊँच परमपिता। वो है निराकारी दुनियॉ में रहने वाला। जहॉ हम आत्माएं भी रहती हैं। फिर उनसे नीचे ब्र.वि.शं. सूक्ष्मवतनवासी। यह तबक्के हैं। ऊँच ते ऊँच परमपिता की महिमा सुनी शिवाय नमः। तुम मात–पिता सहायक बंधु। यह उनकी महिमा है। फिर कहेंगे ब्रह्मा देवता नमः। शंकर देवता नमः। वो रचता , वो रचना। फिर है यह मनुष्य शरीर। इस मनुष्य सृष्टि में ही पावन और पतित बनते हैं। सतयुग में पावन , कलियुग में पतित हैं। भारत में आज से 5000 वर्ष पहले देवी देवता थे। वो भी थे मनुष्य ; परंतु सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण.....यह उन्हों की महिमा है। वहॉ हिंसा होती नहीं। विकार में जाते नहीं थे। उनको कहा ही जाता सम्पूर्ण निर्विकारी। विकारी मनुष्य उन्हों की महिमा गाते हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न.....हम नीच पापी हैं। परमपिता को भी याद करते हैं ; परंतु उनको कोई जानते नहीं हैं। इसलिए आर्फन ठहरे। गाते भी हैं तुम मात पिता.....जिससे स्वर्ग के सुख घनेरे मिलते हैं। फिर जब रावणराज्य शुरू होता है तो मनुष्य बाप को भूल पतित आर्फन निधन के बन पड़ते हैं। आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। सब जगह देखो झगड़े ही झगड़े लगे हुए हैं। कितने पार्टीशन हैं। स्वर्ग में तो एक ही ल.ना. का राज्य था। भारत सारे स्वर्ग का मालिक था। यहॉ तो टुकड़े2 है। यह यह समुन्द्र तुम्हारा यह हमारा। यह धरती हमारी। पंजाब, यू.पी., राजस्थान अलग2 हो गए हैं। भाषा पर भी झगड़े हैं ; क्योंकि परलौकिक मॉ–बाप को नहीं जानते हैं। भारत स्वर्ग था तो यह कोई बात नहीं थी। अब स्वर्ग होना है। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। बेहद का बाप बच्चों को कहते हैं तुम कितने बेसमझ बन पड़े हो। कहते भी हो हे परमपिता परमात्मा। फिर उनकी बायोग्राफी को नहीं जानते हो। बाप पतित–पावन सद्गति दाता है। यह तुम जानते नहीं हो। सिर्फ कह देते हो ईश्वर सर्वव्यापी है। सर्वव्यापी से वर्सा कैसे मिलेगा?जरूर बाप चाहिए ना वर्सा देने वाला। लौकिक बाप बच्चों को पैदा करे और बच्चों से पूछो तुम्हारा बाप कहॉ है? तो क्या सर्वव्यापी कहेंगे? अरे बेहद का बाप तो रचयिता है ना। उसको ही सभी पुकारते हैं हे पतित–पावन शिवबाबा आकर के हमको पावन बनाओ। जैसे हम स्वर्ग में पावन थे। फिर से हमको पावन बनाओ। हम बहुत दुःखी हैं। जब से रावणराज्य शुरू होता है तो सभी मनुष्य पतित होने लग पड़ते हैं। दर2 धक्के खाते रहते हैं। समझते हैं ठिक्कर–भित्तर सबमें परमात्मा है। मूर्तियॉ ठिक्कर–भित्तर की बनी हुई ना। तो समझते हैं इसमें भी भगवान है। अरे पत्थर में भगवान कहॉ से आया। वो तो परमधाम में रहता है। कितने ढेर चित्र बनाते हैं। फिर जब पुराने होते हैं तो फेंक देते हैं। यह है गुड़ियों की पूजा। भक्ति है ही दुर्गति। जब दुर्गति होती है तब कहते हैं हे बाबा हमको सदगति दो। सर्व का सदगति दाता पतित–पावन शिवबाबा है। उनको सब भूल गए हैं। सर्व मनुष्य उनको याद करते हैं। सबका पतियों का पति अथवा बापों का बाप है। बाप कहते हैं बच्चे अब पावन बनो। तुम्हारी आत्मा अब पतित बन गई है। खाद पड़ गई है। सच्चा सोना में खाद डालते हैं। खाद अथवा अलाय पड़ने से सोने का मुरप कम हो जाता है। तो यह भी तमोप्रधान दुनियॉ है। पहले गोल्डन एज में थी। सम्पूर्ण निर्विकारी थे। फिर सिल्वर की खाद पड़ी। गोल्डन एज के बाद आता सिल्वर एज। फिर कापर आयरन एज में आ जाते हैं। आत्मा पतित होती जाती है। अभी तो बिल्कुल ही आयरन एज्ड हो गए हैं। वो ही भारत सतोप्रधान था। अब तमोप्रधान हो गया है। जो पहले2 आए थे जरूर उन्हों को ही 84 जन्म लेने पड़े। कृश्चियन आते ही बाद में हैं। वो तो 84 जन्म ले ना सके। वो 35–40 जन्म पाते होंगे। सब तो 84 जन्म ले ना सके। 84 जन्म लेने वाले की अब आयु पूरी हुई। सृष्टि की आयु भी पूरी

होती है। फिर नई बनेगी। नया भारत था तो वहॉ सब सुखी थे। नई दुनियॉ में है सुख। पुरानी में है दुःख। पुराने मकान को तोड़ा जाता है। पुरानी दुनियॉ में सब दुःखी हैं। फिर इन सबको सुखी बनाने वाला तो बाप ही है। सतयुग में भारत सुखी था। बाकी सब आत्माएं शांतिधाम में थीं जिसको साइलेंस बल कहा जाता है। साइलेंस वर्ल्ड फिर सटल वर्ल्ड (सूक्ष्मवतन) । वहॉ शरीर ही नहीं तो आत्मा आवाज़ कैसे करेगी। तो अभी सब आत्मा तमोप्रधान पतित है। इसलिए इनको आयरन एज कहा जाता है। पहले गोल्डन एज्ड थी। अब फिर बाप गोल्डन एज में ले जाते हैं अर्थात् मनुष्य से देवता बनाते हैं। सतयुग में स्त्री–पुरुष दोनों पवित्र रहते हैं। उनको रामराज्य कहा जाता है। अभी है रावण राज्य। एक–दो को दुःख देते रहते। काम कटारी चलाते रहते। भगवान कहते हैं बच्चे काम महाशत्रु है। इसने तुमको दुःख दिया है। तुम नीचे गिरते आए हो। अभी कोई कला ना रही है। फिर 16 कला समपूर्ण बनाने बाप आए हैं। इसमें सन्यासियों मुआफिक तुमको घर–बार भी छोड़ना नहीं है। पावन दुनियॉ में जाने लिए यह अन्तिम जन्म पवित्र जरूर बनना है। जो बाप द्वारा पवित्र बनेंगे वो पवित्र दुनियॉ का मालिक बनेंगे। यहॉ तुम बच्चों आए हो बाप के पास। यह हेड आफिस है जहॉ सब आते हैं। परलौकिक बाप आत्माओं को कहते हैं बच्चे अब देही अभिमानी बनों। आत्माएं भी कहती हैं हे बाबा हम आपका फरमान जरूर मानेंगे। पवित्र बनेंगे। यह श्रीमत है ना। श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनना है। रावण की मत से तुम भ्रष्ट बने हो। तो इस शरीर द्वारा आत्मा कहती है हे शिवबाबा हम आपके बने हैं। बाप कहते हैं मैं आया ही हूँ सर्व की सदगति करने। पापात्मा से पुण्यात्मा बनाने। इसलिए पवित्र जरूर बनना है। पहले जब पवित्र बन बी.के. बनें तब ही शिवबाबा से स्वर्ग के सुख का वर्सा पावें। तुम फिर से आए हो बाप से वर्सा लेने। तुम जो देवी देवता धर्म वाले थे। तुमने ही 84 जन्म लिए हैं। अभी वो देवी देवता धर्म है नहीं। देवताएं जो पतित बने हैं वो ही फिर आकर पावन बनेंगे। जो आए ही बाद में हैं वो स्वर्ग में जा ना सके। जब देवता धर्म वालों के 84 जन्म पूरे हुए हैं उन्हों को ही फिर से देवता बनना है। बाप कहते हैं मैं ही आय ब्रह्मा द्वारा देवी देवता बनाता हूँ। पवित्र बनने बिगर तुम स्वर्ग के मालिक बन नहीं सकते हो। इन बातों को समझेंगे वो ही जो आकर बी.के. बनेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा गाया जाता है ना। मनुष्य सृष्टि के बड़े जगतपिता और जगदम्बा। उन्हों को इतने बच्चे कैसे होंगे? यह है ब्रह्मामुखवंशावली। सभी मनो बाबा कहते हैं। कैसे बच्चे बने? शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा तुमको अपना बनाया है। तुम शिवबाबा को याद करते हो। उनसे स्वर्ग का वर्सा लें। तो सभी बी.के. कुमारियॉ आपस में भाई–बहन हो गए। यह है युक्ति। बाप कहते हैं तुम गृहस्थ व्यवहार में भल रहो ; परंतु कमल फूल समान पवित्र रहो। यह कर के दिखाओ। घर–बार को छोड़ने की बात नहीं है। अपनी रचना की सम्भाल भी करो। सिर्फ पवित्र रहो तो इन देवताओं जैसा फिर से बनेंगे। देवी देवता धर्म की स्थापना जरूर होनी है। बाप समझाते हैं तुम कितने मूर्ख बन गए हो। आदि सनातन धर्म छोड़ अपना हिंदू नाम रख दिया है। हिंदू धर्म किसने स्थापन किया कुछ भी पता नहीं है। श्रीकृष्ण तो देवता था। वो जैसे हिंदू धर्म स्थापन करेंगे। बाप बच्चों को सन्मुख बैठ समझाते हैं। यह है हेड आफिस मधुबन। कितने सेंटर्स खुलते हैं। जो कल्प पहले बी.के. बने थे वो ही ब्राह्मण से देवता , फिर क्षत्रिय , फिर वैश्य , शूद्र बनते आए हैं। अब फिर ब्राह्मण बनना पड़े। चोटी ब्राह्मणों की है ना। इन वर्णों से पास करना होता है। बाप कहते हैं तुम तो देवी देवताएं थे। अब फिर तुम शूद्र से ब्राह्मण बने हो सो देवी देवता बनने लिए तुम पवित्र बने हो। गायन भी है कुमारी वो जो 21 पीढ़ी का उद्धार करे। तुम सब बी.के. हो ना। कुमार और कुमारियॉ दोनों चाहिए ना। तो हरेक पीढ़ी लिए सदा सुख का रास्ता

बनाते हो। चलो अपने सुखधाम। यह है दुःखधाम। अभी बाप को याद करना है। बाप कहते हैं पवित्र बनो। मामएकम याद करो। कोई भी देहधारी को याद ना करो। बाप ही बैठ बच्चों को सुख घनेरे देते हैं। अभी कितना दुःख है। दुःख में याद किया जाता है भगवान को। बाप स्वर्ग में ले जाते फिर वहॉ याद क्यों करेंगे?यहॉ भगवान को याद करते हैं हे प्रभु तुम हो अंधों की लाठी ; परंतु जानते कुछ भी नहीं। ल.ना. के आगे भी जाकर कहेंगे तुम मातपिता। अब वो तो है स्वर्ग के मालिक। वो थोड़े ही सबके मातपिता हो सकते हैं। कृष्ण एक राजधानी का , राधे दूसरी राजधानी की। फिर दोनों की सगाई हो जाती है। स्वयंवर के बाद नाम बदल जाता है। विष्णु के दो रूप ल.ना. बनते हैं। दीपमाला पर महालक्ष्मी को बुलाते हैं ना। वो हैं युगल। अभी तुम काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठते हो। तुम हो सच्चे ब्राह्मण। तुम पवित्रता की प्रतिज्ञा कराते हो। बेहद का बाप कहते हैं पवित्र बनो तो पवित्र दुनियॉ के मालिक बनोगे। घर बैठे भी याद कर सकते हो। बहुत पुरुष लोग स्त्री को कहते हैं तुम बाहर क्यों जाती हो? घर में बैठे भगवान को याद करो। फिर भी बाहर मंदिर आदि में जरूर जाते हैं। तुम धक्के खाते हो। भल घर बैठे शिवबाबा को याद करो। बाबा कहते हैं तुम सबको वापिस आना है। मरना तो सबको है। यह वो ही महाभारत लड़ाई है। यवनों की है यहॉ लड़ाई। सतयुग में कोई लड़ाई होती नहीं। यह शास्त्रों में झूठ लिख दिया है कि देवताओं और असुरों की लड़ाई हुई। असुर यहॉ ओर देवताएं हैं पावन सतयुग में। फिर लड़ाई कैसे लग सकती?यह झूठ है ना। बाप कहते हैं तुम इस रावण पर जीत पहनो। बाकी लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। यह महाभारत लड़ाई भी लगनी है। बाकी थोड़े बचेंगे। भारत है अविनाशी खंड। बाकी सब खतम हो जावेंगे। बाबा सबको वापिस ले जावेंगे। बाप सर्व की सदगति करते हैं। आत्माओं को ले जाते हैं। अभी तुम बाप से वर्सा ले रहे हो। सन्यासी दे ना सके। वो कोई स्वर्ग का रचयिता थोड़े ही है। अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है। बाकी नर्क के मनुष्य मात्र खतम हो जावेंगे। मरना तो है। क्यों ना जीते जी वर्सा ले लेवें। नहीं तो फिर हाय2 करेंगे। कुम्भकरण की आसुरी नींद से अंत में जागेंगे। अभी तुमको सारे चक्कर की नालेज बुद्धि में है। तुम ही पूज्य थे। फिर पुजारी बने। अब फिर पूज्य बनते हो। पावन राजाएं भी थे। पतित राजाएं भी थे। अब नो राजा। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। फिर सृष्टि को चक्कर खाना है। सतयुग आना है। शिवबाबा इनके मुख से कहते हैं तुम हमारे बच्चे हो। तुम भी कहते हो बाबा हम आप के बच्चे हैं। यह है ब्रह्मामुखवंशावली। तुम ईश्वर का परिवार हो। भगवानुवाच इन गुरू गुसाई आदि सबको भूलते जाओ। एक बाप को याद करो। हम आत्माएं अब वापिस स्वीटहोम जाते हैं। जहॉ बाप रहते हैं।शिवबाबा स्वीट साइलेंस स्वर्ग में भेजते हैं। वहॉ भी शांति और सुख है। तुम यहॉ आए हो पवित्रता सुख–शांति का वर्सा लेने 21 जन्म लिए। यह पढ़ाई 21 जन्म लिए है। तुम यहॉ के लिए नहीं पढ़ते हो। यह मृत्युलोक है। तुम अमर बनते हो। तुमको काल नहीं खा सकते। वहॉ अकाले मृत्यु नहीं होता। तुम अमरनाथ द्वारा अमर कथा सुन बनाते हो। जो बाप पास आय समझेंगे वो ही पवित्रता की प्रतिज्ञा करेंगे। पतित नालायक को बाप बैठ लायक बनाते हैं। यह है ही पतित भ्रष्टाचारियों की दुनियॉ।सतयुग है श्रेष्ठाचारियों की दुनियॉ। कैसे होते हैं यह भी बच्चों को समझाया है। जिसने सबसे जास्ती भक्ति की होगी वो ही फिर से आय वर्सा लेंगे। बी.के. तो ढेर हो जावेंगे। दिन–प्रतिदिन सेंटर खुलते जावेंगे। शूद्र से आकर ब्राह्मण बनेंगे। फिर देवता, क्षत्रिय.....बनेंगे। अभी तुम हो ईश्वरीय सन्तान। फिर दैवी सन्तान बनोगे। यहॉ तुम बाप से वर्सा लेते हो। भारत की तुम सेवा करते हो जिसका फल तुमको नई दुनियॉ में मिलेगा। अच्छा यादप्यार गुडमार्निंग।